ग्राफ़िक

One of the first releases from Commercial Type, Graphik has grown in both popularity and language support over time. Independent designer Rocky Malaviya brings its low contrast straightforwardness to the Devanagari script, finding natural ways to simplify the forms, particularly stroke endings and “knots”, without forcing the shapes to appear overly synthetic.

PUBLISHED
2024

DESIGNED BY
HITESH MALAVIYA
CHRISTIAN SCHWARTZ

CREATIVE DIRECTION
NOVEMBER

9 STYLES
9 WEIGHTS

FEATURES
PROPORTIONAL/TABULAR LINING FIGURES
PROPORTIONAL/TABULAR OLDSTYLE FIGURES
FRACTIONS (PREBUILT AND ARBITRARY)
SUPERSCRIPT/SUBSCRIPT

Graphik was inspired from all parts of the 20th century. The heavy end of the family is based in part on Paul Renner’s Plak, while the lighter weights are more influenced by a “B-list” of sans serifs released by Eurpoean foundries in the twentieth century, such as Neuzeit Grotesk, Folio, Recta, and Maxima. None of these families were groundbreaking, but many of them had a certain quirky charm. Under the direction of Shiva Nallaperumal at November, Graphik was expanded with the Bangla and Tamil scripts, in addition to Devanagari, with the aim of matching its usage at both text and display sizes, wide range of weights, and appealing plainness, without adapting the actual letterforms from the Latin script.

ग्राफ़िक देवनागरी थिन
ग्राफ़िक देवनागरी एक्स्ट्रालाइट
ग्राफ़िक देवनागरी लाइट
ग्राफ़िक देवनागरी रेग्युलर
ग्राफ़िक देवनागरी मीडियम
ग्राफ़िक देवनागरी सेमीबोल्ड
ग्राफ़िक देवनागरी बोल्ड
ग्राफ़िक देवनागरी ब्लैक
ग्राफ़िक देवनागरी सुपर

Graphik Devanagari Thin
Graphik Devanagari Extralight
Graphik Devanagari Light
Graphik Devanagari Regular
Graphik Devanagari Medium
Graphik Devanagari Semibold
Graphik Devanagari Bold
Graphik Devanagari Black
Graphik Devanagari Super

प्रतिज्ञा (उपन्यास)
People's voice

GRAPHIK DEVANAGARI THIN, 70 PT

उभरता व्यक्तित्व
Ahmedabad?

GRAPHIK DEVANAGARI EXTRALIGHT, 70 PT

तक्षशिला स्टेशन
Gulab Jamun

GRAPHIK DEVANAGARI LIGHT, 70 PT

इलेक्ट्रॉनिक प्रेम
Maqbool Rd.

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 70 PT

दूरदर्शी वाद्य यंत्र
Instrumental

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 70 PT

अर्ध सत्य (१९८३)
Newspapers

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 70 PT

सर्वश्रेष्ठ लेखक
Jaipur Tours

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 70 PT

मगरमच्छ झील
Kochi–Delhi

GRAPHIK DEVANAGARI BLACK, 70 PT

काली व्हिस्की!
29 Decades

GRAPHIK DEVANAGARI SUPER, 70 PT

दादा साहब फालके, सर जे. जे.
स्कूल ऑफ आर्ट से प्रशिक्षित
सृजनशील कलाकार थे। वह

GRAPHIK DEVANAGARI THIN, 40 PT

स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतरही कुष्ठरोग
निर्मूलनाच्या कार्यासह त्यांनी
इतरही राष्ट्रीय महत्त्वाच्या

GRAPHIK DEVANAGARI EXTRALIGHT, 40 PT

मैं दावे के साथ कह सकता हूँ
कि जब नुसरत साहब गाते
होंगे, खुदा भी उन्हें सुनता हुआ

GRAPHIK DEVANAGARI LIGHT, 40 PT

त्यस साहसिक यात्राका क्रममा
आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको
मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 40 PT

उन्हें चार साल के भीतर अपने थीसिस के लिए लंदन लौटने की अनुमति मिली। बड़ौदा

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 40 PT

तत्कालीन समाजात कुष्ठरोग हे मागील जन्मीच्या पापांचे फळ समजले जाई तसेच

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 40 PT

प्रसिद्ध निर्देशक उषा गांगुली द्वारा रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया है और इसी उपन्यास पर

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 40 PT

सर्वोच्च शिखरको उचाइ नाप्ने विधि बेलायतका इन्जिनियर जर्ज एभरेष्टले विकास गरेका

GRAPHIK DEVANAGARI BLACK, 40 PT

उपन्यास एवं कहानियों के क्षेत्र में उनका योगदान उनके लेखन में प्राथमिक महत्व

GRAPHIK DEVANAGARI SUPER, 40 PT

कुबेरनाथ राय का जन्म २६ मार्च १९३३ को उत्तर
प्रदेश के गाजीपुर जिले के मतसाँ ग्राम में हुआ।
Real estate rates in Mumbai have risen

GRAPHIK DEVANAGARI THIN, 25 PT

मे २६ मा विहान ७ बजे वोर्डेलो र इभान्स दुवैजना
हन्ट एवम् नामग्याल शेर्पाको साथमा खोंचबाट
The Bangalore Film Festival is starting

GRAPHIK DEVANAGARI EXTRALIGHT, 25 PT [ALTERNATE a]

उन्होंने अपने निर्देशन का कार्य फिल्म 'पाँच' से
शुरुआत की, जो कि केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन
Revolutionary literature distributed in

GRAPHIK DEVANAGARI LIGHT, 25 PT

आजही मुंबई शहरात कोळी जमातीच्या व शुद्ध
क्षत्रिय असलेल्या आगरी ज्ञातीचे वास्तव्य दिसून
The famed novelist Vikram Chandra's

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 25 PT [ALTERNATE t]

**फणीन्द्रनाथ पाल ने उनका 'बड़ दिदि' नामक
उपन्यास पुस्तक रूप में प्रकाशित किया १९१३
Weekend trips to Pondicherry soon**

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 25 PT

इस लिपि की शब्दावली भाषा के उच्चारण को
दर्शाती है। रोमन लिपि के विपरीत, इस लिपि
Pritzker prize awarded to B.V. Doshi

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 25 PT

यह कला केन्द्र एक बहुत ही सुंदर स्थान पर
स्थित है, पानी पर झुका हुआ एक पठार जहाँ
Charles Correa’s studio is located

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 25 PT [ALTERNATE a]

मुंबई पश्चिम किनारपट्टीत (कोकण विभाग)
उल्हास नदीच्या मुखावर असलेल्या साल्सेट
The state broadcaster will remain!

GRAPHIK DEVANAGARI BLACK, 25 PT

भोपाल में भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
भेल/ का एक कारखाना है। इसके अतिरिक्त
The Bauhaus in Shantiniketan 192

GRAPHIK DEVANAGARI SUPER, 25 PT [ALTERNATE t]

इटैलियन न्यूरेलिज्म से प्रेरित, समानांतर सिनेमा फ्रांसीसी नयी लहर (फ्रेंच न्यू वेव) और जापानी नयी लहर (जापानी न्यू वेव) से ठीक पहले शुरू हुआ, और 1960 के दशक के भारतीय नयी लहर (भारतीय न्यू वेव) का अग्रदूत बन गया। आन्दोलन शुरू में बाङ्ला सिनेमा के नेतृत्व

GRAPHIK DEVANAGARI THIN, 18 PT

आन्दोलन शुरू में बाङ्ला सिनेमा के नेतृत्व में था और सत्यजीत रे, मृणाल सेन, ऋत्विक घटक, तपन सिन्हा जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित फिल्म निर्माताओं ने इसका निर्माण किया। बाद में इसे भारत और बांग्लादेश के अन्य फिल्म उद्योगों में प्रमुखता मिली। यह अपनी

GRAPHIK DEVANAGARI EXTRALIGHT, 18 PT

मिठी ऊर्फ माहीम ही मुंबईतील सर्वात महत्त्वाची नदी आहे. या नदीची लांबी फक्त १८ किलोमीटर असली तरी दर दहा-पंधरा वर्षांनी हिला बेसुमार पूर येतो आणि मुंबईच्या कुर्ल्यातील आणि अन्य अनेक पश्चिमी उपनगरांतील रस्ते आणि घरे पाण्याखाली जातात

GRAPHIK DEVANAGARI LIGHT, 18 PT

इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 18 PT

कुछ कला फ़िल्मों ने व्यावसायिक सफलता भी हासिल की है, एक उद्योग में जो अपने अतियथार्थवाद या 'काल्पनिक' फिल्मों के लिए जाना जाता है और इनमें कला और व्यावसायिक सिनेमा दोनों की सफलतापूर्वक संयुक्त विशेषताएँ हैं। इसका एक

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 18 PT

महानगरपालिकेचे कार्यक्षेत्र नागरी प्रशासन व पायाभूत सेवा-सुविधा पुरवणे हे असते. प्रशासकीय प्रमुख या नात्याने बहुतांश कार्यकारी अधिकार महाराष्ट्र सरकारने नेमलेल्या आय.ए.एस. दर्जाच्या महापालिका आयुक्ताकडे असतात. प्रशासकीय सोईकरता

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 18 PT

सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 18 PT

एक त्रुटिहीन कला फिल्म के व्यावसायिक रूप से सफल होने का सबसे ताजा उदाहरण हरप्रीत संधू की कनाडियन-पंजाबी फिल्म 'वर्क वेदर वाइफ' है। यह पंजाबी फिल्म उद्योग में सिनेमा की शुरुआत का प्रतीक है। 1960 के दशक में भारत

GRAPHIK DEVANAGARI BLACK, 18 PT

बंगाली फिल्म निर्देशक ऋत्विक घटक संस्थान में प्रोफेसर और एक प्रसिद्ध निर्देशक थे। हालांकि रे के विपरीत घटक ने अपने जीवनकाल में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नहीं की। उदाहरण के लिए, घटक की नागरिक (1952) शायद एक बंगाली कला

GRAPHIK DEVANAGARI SUPER, 18 PT

GRAPHIK DEVANAGARI LIGHT, MEDIUM, 16/23 PT

LIGHT

१९७० और १९८० के दशक के दौरान समानांतर सिनेमा ने हिन्दी सिनेमा की मुख्यधारा में काफी हद तक प्रवेश किया। इसका नेतृत्व गुलज़ार, श्याम बेनेगल, मणि कौल, राजिंदर सिंह बेदी, कांतिलाल राठौड़ और सईद अख्तर मिर्ज़ा जैसे निर्देशकों ने किया था और बाद में गोविन्द निहलानी जैसे निर्देशक इस दौर के भारतीय कला सिनेमा के मुख्य निर्देशक बन गये। मणि कौल की आरंभिक कई फिल्में **उसकी रोटी** (१९७१), **आषाढ़ का एक दिन** (१९७२) **और दुविधा** (१९७४) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी प्रशंसित हुई और समीक्षकों ने भी उनकी सराहना की। उन्हें सम्मानित किया गया। बेनेगल के निर्देशन में अंकुर (१९७४) एक बड़ी महत्वपूर्ण सफलता थी और इसके बाद कई काम ऐसे हुए जिन्होंने आंदोलन में एक और आयाम बनाया। ऋत्विक घटक के छात्र कुमार साहनी ने अपनी पहली फीचर **'माया दर्पण'** (१९७२) प्रदर्शित की जो भारतीय कला सिनेमा की एक ऐतिहासिक फिल्म बन गयी। इन फिल्म-निर्माताओं ने अपनी अलग शैली में यथार्थवाद को बढ़ावा देने की कोशिश की, हालाँकि उनमें से कई ने अक्सर लोकप्रिय सिनेमा की कुछ मिलावटों को स्वीकार किया। इस समय के समानांतर सिनेमा ने युवा अभिनेताओं की एक पूरी नयी पीढ़ी खड़ी की, जिसमें शबाना आज़मी, स्मिता पाटिल, अमोल पालेकर, ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह, कुलभूषण खरबंदा, पंकज कपूर, दीप्ति नवल, फारुख शेख और यहाँ तक कि हेमा मालिनी, राखी, रेखा जैसे व्यावसायिक सिनेमा के कलाकारों ने भी कला सिनेमा में काम किया। अडूर गोपालकृष्णन ने १९७२ में अपनी पहली फीचर फिल्म **स्वयंवरम** के साथ मलयालम सिनेमा में भारतीय नयी धारा (इंडियन न्यू वेव) का विस्तार किया। भारतीय सिनेमा के स्वर्ण

MEDIUM

MEDIUM

MEDIUM

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, SEMIBOLD, 16/23 PT

REGULAR

१९७० और १९८० के दशक के दौरान समानांतर सिनेमा ने हिन्दी सिनेमा की मुख्यधारा में काफी हद तक प्रवेश किया। इसका नेतृत्व गुलज़ार, श्याम बेनेगल, मणि कौल, राजिंदर सिंह बेदी, कांतिलाल राठौड़ और सईद अख्तर मिर्ज़ा जैसे निर्देशकों ने किया था और बाद में गोविन्द निहलानी जैसे निर्देशक इस दौर के भारतीय कला सिनेमा के मुख्य निर्देशक बन गये। मणि कौल की आरंभिक कई फिल्में

BOLD

उसकी रोटी (१९७१), **आषाढ़ का एक दिन** (१९७२) **और दुविधा** (१९७४) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी प्रशंसित हुई और समीक्षकों ने भी उनकी सराहना की। उन्हें सम्मानित किया गया। बेनेगल के निर्देशन में अंकुर (१९७४) एक बड़ी महत्वपूर्ण सफलता थी और इसके बाद कई काम ऐसे हुए जिन्होंने आंदोलन में एक और आयाम बनाया। ऋत्विक

BOLD

घटक के छात्र कुमार साहनी ने अपनी पहली फीचर **'माया दर्पण'** (१९७२) प्रदर्शित की जो भारतीय कला सिनेमा की एक ऐतिहासिक फिल्म बन गयी। इन फिल्म-निर्माताओं ने अपनी अलग शैली में यथार्थवाद को बढ़ावा देने की कोशिश की, हालाँकि उनमें से कई ने अक्सर लोकप्रिय सिनेमा की कुछ मिलावटों को स्वीकार किया। इस समय के समानांतर सिनेमा ने युवा अभिनेताओं की एक पूरी नयी पीढ़ी खड़ी की, जिसमें शबाना आज़मी, स्मिता पाटिल, अमोल पालेकर, ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह, कुलभूषण खरबंदा, पंकज कपूर, दीप्ति नवल, फारुख शेख और यहाँ तक कि हेमा मालिनी, राखी, रेखा जैसे व्यावसायिक सिनेमा के कलाकारों ने भी कला सिनेमा में काम किया। अडूर गोपालकृष्णन ने १९७२ में अपनी पहली फीचर फिल्म

BOLD

स्वयंवरम के साथ मलयालम सिनेमा में भारतीय नयी धारा

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, BOLD, 16/23 PT

MEDIUM

१९७० और १९८० के दशक के दौरान समानांतर सिनेमा ने हिन्दी सिनेमा की मुख्यधारा में काफी हद तक प्रवेश किया। इसका नेतृत्व गुलज़ार, श्याम बेनेगल, मणि कौल, राजिंदर सिंह बेदी, कांतिलाल राठौड़ और सईद अख्तर मिर्ज़ा जैसे निर्देशकों ने किया था और बाद में गोविन्द निहलानी जैसे निर्देशक इस दौर के भारतीय कला सिनेमा के मुख्य निर्देशक बन गये। मणि कौल की आरंभिक कई फिल्में

BOLD

उसकी रोटी (१९७१), **आषाढ़ का एक दिन** (१९७२) **और दुविधा** (१९७४) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी प्रशंसित हुई और समीक्षकों ने भी उनकी सराहना की। उन्हें सम्मानित किया गया। बेनेगल के निर्देशन में अंकुर (१९७४) एक बड़ी महत्वपूर्ण सफलता थी और इसके बाद कई काम ऐसे हुए जिन्होंने आंदोलन में एक और आयाम बनाया। ऋत्विक

BOLD

घटक के छात्र कुमार साहनी ने अपनी पहली फीचर **'माया दर्पण'** (१९७२) प्रदर्शित की जो भारतीय कला सिनेमा की एक ऐतिहासिक फिल्म बन गयी। इन फिल्म-निर्माताओं ने अपनी अलग शैली में यथार्थवाद को बढ़ावा देने की कोशिश की, हालाँकि उनमें से कई ने अक्सर लोकप्रिय सिनेमा की कुछ मिलावटों को स्वीकार किया। इस समय के समानांतर सिनेमा ने युवा अभिनेताओं की एक पूरी नयी पीढ़ी खड़ी की, जिसमें शबाना आज़मी, स्मिता पाटिल, अमोल पालेकर, ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह, कुलभूषण खरबंदा, पंकज कपूर, दीप्ति नवल, फारुख शेख और यहाँ तक कि हेमा मालिनी, राखी, रेखा जैसे व्यावसायिक सिनेमा के कलाकारों ने भी कला सिनेमा में काम किया। अडूर गोपालकृष्णन ने १९७२ में अपनी पहली फीचर फिल्म

BOLD

स्वयंवरम के साथ मलयालम सिनेमा में भारतीय नयी धारा

Hindi

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, SEMIBOLD, 10/14 PT

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद का आरम्भ 1920 और 1930 के दशक का है। इसके सबसे पुराने उदाहरणों में से एक बाबूराव पेंटर की 1925 की मूक फिल्म 'सावकारी पाश' एक क्लासिक थी। यह फ़िल्म एक गरीब किसान (वी शांताराम द्वारा अभिनीत) के बारे में थी, जो "एक लालची साहूकार को अपनी जमीन देने को मजबूर हो जाता है और शहर की ओर पलायन कर एक मिल वर्कर बन जाता है।" यह यथार्थवादी सफलता के रूप में भारतीय सिनेमा के विकास में एक मील का पत्थर बन गया है। 1937 में शांताराम की फिल्म 'दुनिया न माने' ने भी भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति की आलोचना की। यह फ़िल्म उस समय बनायी गयी थी जब नारी स्वतंत्रता जैसा कोई शब्द समाज ने नहीं सुना था। इसमें स्त्री की गरिमा को बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है। जो लोग यह मानते हैं कि औरत आदमी के पैर की जूती है, उनके गाल पर यह करारे तमाचे की तरह थी।

प्रारम्भिक समय

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र फ़िल्में १९५० के दशक में और १९६०

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, BOLD, 10/14 PT

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद का आरम्भ 1920 और 1930 के दशक का है। इसके सबसे पुराने उदाहरणों में से एक बाबूराव पेंटर की 1925 की मूक फिल्म 'सावकारी पाश' एक क्लासिक थी। यह फ़िल्म एक गरीब किसान (वी शांताराम द्वारा अभिनीत) के बारे में थी, जो "एक लालची साहूकार को अपनी जमीन देने को मजबूर हो जाता है और शहर की ओर पलायन कर एक मिल वर्कर बन जाता है।" यह यथार्थवादी सफलता के रूप में भारतीय सिनेमा के विकास में एक मील का पत्थर बन गया है। 1937 में शांताराम की फिल्म 'दुनिया न माने' ने भी भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति की आलोचना की। यह फ़िल्म उस समय बनायी गयी थी जब नारी स्वतंत्रता जैसा कोई शब्द समाज ने नहीं सुना था। इसमें स्त्री की गरिमा को बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है। जो लोग यह मानते हैं कि औरत आदमी के पैर की जूती है, उनके गाल पर यह करारे तमाचे की तरह थी।

प्रारम्भिक समय

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र फ़िल्में १९५० के

Hindi

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, BLACK, 10/14 PT

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद का आरम्भ 1920 और 1930 के दशक का है। इसके सबसे पुराने उदाहरणों में से एक बाबूराव पेंटर की 1925 की मूक फिल्म 'सावकारी पाश' एक क्लासिक थी। यह फ़िल्म एक गरीब किसान (वी शांताराम द्वारा अभिनीत) के बारे में थी, जो "एक लालची साहूकार को अपनी जमीन देने को मजबूर हो जाता है और शहर की ओर पलायन कर एक मिल वर्कर बन जाता है।" यह यथार्थवादी सफलता के रूप में भारतीय सिनेमा के विकास में एक मील का पत्थर बन गया है। 1937 में शांताराम की फिल्म 'दुनिया न माने' ने भी भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति की आलोचना की। यह फ़िल्म उस समय बनायी गयी थी जब नारी स्वतंत्रता जैसा कोई शब्द समाज ने नहीं सुना था। इसमें स्त्री की गरिमा को बहुत खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है। जो लोग यह मानते हैं कि औरत आदमी के पैर की जूती है, उनके गाल पर यह करारे तमाचे की तरह थी।

प्रारम्भिक समय

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 10/14 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा

GRAPHIK DEVANAGARI BLACK, 10/14 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा

Hindi

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 7/9 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र फ़िल्में १९५० के दशक में और १९६० के दशक में कान फ़िल्म महोत्सव में पाल्मे डी'ओर के लिए अक्सर प्रतिस्पर्धा में रहीं, जिनमें से कुछ ने समारोह में बड़े

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 7/9 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र फ़िल्में १९५० के दशक में और १९६० के दशक में कान फ़िल्म महोत्सव में पाल्मे डी'ओर के लिए अक्सर प्रतिस्पर्धा में रहीं, जिनमें से कुछ ने समारोह में

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 7/9 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र फ़िल्में १९५०

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 7/10 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 7/10 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है।

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 7/10 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है।

Hindi

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 9/12 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र फ़िल्में १९५० के दशक में और १९६० के दशक में कान

GRAPHIK REGULAR, 9/12 PT

The parallel cinema movement began to take shape from the late 1940s, by pioneers such as satyajit ray, ritwik ghatak, bimal roy, mrinal sen, tapan sinha, khwaja ahmad abbas, buddhadeb dasgupta, chetan anand, guru dutt and v. Shantaram. This period is considered part of the 'golden age' of indian cinema. This cinema borrowed heavily from the indian literature of the times, hence became an important study of the contemporary indian society, and is now used by scholars and historians alike to map the changing demographics and socio-economic as well as political temperament of the indian populace. Right from its inception, indian cinema has had people who wanted to and did use the medium for more than entertainment. They used it to highlight prevalent issues and sometimes to throw open new issues for the public. Early examples of Indian cinema's social realist movement include Dharti Ke Lal (1946), a film about the Bengal famine of 1943 directed and written by Khwaja Ahmad Abbas and Neecha Nagar (1946), a film directed by Chetan

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 9/12 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र फ़िल्में १९५०

GRAPHIK MEDIUM, 9/12 PT

The parallel cinema movement began to take shape from the late 1940s, by pioneers such as satyajit ray, ritwik ghatak, bimal roy, mrinal sen, tapan sinha, khwaja ahmad abbas, buddhadeb dasgupta, chetan anand, guru dutt and v. Shantaram. This period is considered part of the 'golden age' of indian cinema. This cinema borrowed heavily from the indian literature of the times, hence became an important study of the contemporary indian society, and is now used by scholars and historians alike to map the changing demographics and socio-economic as well as political temperament of the indian populace. Right from its inception, indian cinema has had people who wanted to and did use the medium for more than entertainment. They used it to highlight prevalent issues and sometimes to throw open new issues for the public. Early examples of Indian cinema's social realist movement include Dharti Ke Lal (1946), a film about the Bengal famine of 1943 directed and written by Khwaja Ahmad Abbas and Neecha Nagar (1946), a

Hindi

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 9/12 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र

GRAPHIK SEMIBOLD, 9/12 PT

The parallel cinema movement began to take shape from the late 1940s, by pioneers such as satyajit ray, ritwik ghatak, bimal roy, mrinal sen, tapan sinha, khwaja ahmad abbas, buddhadeb dasgupta, chetan anand, guru dutt and v. Shantaram. This period is considered part of the 'golden age' of indian cinema. This cinema borrowed heavily from the indian literature of the times, hence became an important study of the contemporary indian society, and is now used by scholars and historians alike to map the changing demographics and socio-economic as well as political temperament of the indian populace. Right from its inception, indian cinema has had people who wanted to and did use the medium for more than entertainment. They used it to highlight prevalent issues and sometimes to throw open new issues for the public. Early examples of Indian cinema's social realist movement include Dharti Ke Lal (1946), a film about the Bengal famine of 1943 directed and written by Khwaja Ahmad Abbas and Neecha

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 9/12 PT

सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल रॉय, मृणाल सेन, तपन सिन्हा, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बुद्धदेव दासगुप्ता, चेतन आनंद, गुरुदत्त और वी. शांताराम जैसे अग्रगामी निर्देशकों के द्वारा 1940 के दशक के अंत से 1965 के अंत तक समानांतर सिनेमा आंदोलन शुरू हुआ। यह काल भारतीय सिनेमा के 'स्वर्ण युग' का हिस्सा माना जाता है। इस सिनेमा ने इस समय के भारतीय साहित्य से बहुत अधिक उधार लिया है। इसलिए समकालीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अध्ययन बन गया है और अब विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा इसका उपयोग बदलते जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक के साथ-साथ भारतीय आबादी के राजनीतिक स्वभाव का नक्शा बनाने के लिए किया जाता है। अपनी शुरुआत से ही भारतीय सिनेमा में ऐसे लोग हैं जो मनोरंजन से अधिक माध्यमों का उपयोग करना चाहते थे और करते थे। उन्होंने इसका इस्तेमाल प्रचलित मुद्दों को उजागर करने के लिए और कभी-कभी खुले नये मुद्दों को जनता के लिए उद्घाटित करने के लिए किया। भारतीय सिनेमा के सामाजिक यथार्थवादी आंदोलन के शुरुआती उदाहरणों में ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा निर्देशित और लिखित धरती के लाल (1946) (1943 के बंगाल के अकाल के बारे में एक फिल्म) और नीचा नगर (1946) चेतन आनंद द्वारा निर्देशित और ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा लिखित फिल्म है। 'नीचा नगर' ने पहले कान फिल्म समारोह ग्रांड पुरस्कार जीता। तब से भारतीय स्वतंत्र

GRAPHIK BOLD, 9/12 PT

The parallel cinema movement began to take shape from the late 1940s, by pioneers such as satyajit ray, ritwik ghatak, bimal roy, mrinal sen, tapan sinha, khwaja ahmad abbas, buddhadeb dasgupta, chetan anand, guru dutt and v. Shantaram. This period is considered part of the 'golden age' of indian cinema. This cinema borrowed heavily from the indian literature of the times, hence became an important study of the contemporary indian society, and is now used by scholars and historians alike to map the changing demographics and socio-economic as well as political temperament of the indian populace. Right from its inception, indian cinema has had people who wanted to and did use the medium for more than entertainment. They used it to highlight prevalent issues and sometimes to throw open new issues for the public. Early examples of Indian cinema's social realist movement include Dharti Ke Lal (1946), a film about the Bengal famine of 1943 directed and written by Khwaja Ahmad Abbas and

Marathi

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, SEMIBOLD, 10/14 PT

धुंडिराज गोविंद फाळके ऊर्फ दादासाहेब फाळके (जन्म : त्र्यंबकेश्वर, महाराष्ट्र, - नाशिक, १६ फेब्रुवारी १९४४) हे चित्रपटनिर्मिती करणारे महाराष्ट्रातील व भारतातील पहिली व्यक्ती होते आणि यासाठीच त्यांना भारतीय चित्रपटांचा जनक मानले जाते . १९१३ साली त्यांनी निर्माण केलेला राजा हरिश्चंद्र हा मूक चित्रपट मराठी व भारतीय चित्रपटसृष्टीच्या इतिहासातील आद्य चित्रपट होय. १९३७ पर्यंतच्या आपल्या १९ वर्षाच्या कारकिर्दीत त्यांनी ९५ चित्रपटांची व २६ लघुपटांची निर्मिती केली. भारतीय अभिनेत्यांना त्यांच्या जन्मभरच्या चित्रपटविषयक योगदानाबद्दल भारतीय चित्रसृष्टीतील दादासाहेब फाळके पुरस्कार हा सर्वांत मोठा पुरस्कार दिला जातो.

जीवनचरित्र

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व १९१२ साली त्यांनी राजा हरिश्चंद्र हा पहिला मूकपट काढला. तो ३ मे १९१३ या दिवशी मुंबईच्या कॉरोनेशन चित्रपटगृहात प्रेक्षकांना पहिल्यांदा दाखवण्यात आला. सरस्वतीबाई या दादासाहेब फाळके यांच्या पत्नी. दादासाहेबांचा पहिला चित्रपट बनवण्यात

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, BOLD, 10/14 PT

धुंडिराज गोविंद फाळके ऊर्फ दादासाहेब फाळके (जन्म : त्र्यंबकेश्वर, महाराष्ट्र, - नाशिक, १६ फेब्रुवारी १९४४) हे चित्रपटनिर्मिती करणारे महाराष्ट्रातील व भारतातील पहिली व्यक्ती होते आणि यासाठीच त्यांना भारतीय चित्रपटांचा जनक मानले जाते . १९१३ साली त्यांनी निर्माण केलेला राजा हरिश्चंद्र हा मूक चित्रपट मराठी व भारतीय चित्रपटसृष्टीच्या इतिहासातील आद्य चित्रपट होय. १९३७ पर्यंतच्या आपल्या १९ वर्षाच्या कारकिर्दीत त्यांनी ९५ चित्रपटांची व २६ लघुपटांची निर्मिती केली. भारतीय अभिनेत्यांना त्यांच्या जन्मभरच्या चित्रपटविषयक योगदानाबद्दल भारतीय चित्रसृष्टीतील दादासाहेब फाळके पुरस्कार हा सर्वांत मोठा पुरस्कार दिला जातो.

जीवनचरित्र

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व १९१२ साली त्यांनी राजा हरिश्चंद्र हा पहिला मूकपट काढला. तो ३ मे १९१३ या दिवशी मुंबईच्या कॉरोनेशन चित्रपटगृहात प्रेक्षकांना पहिल्यांदा दाखवण्यात आला. सरस्वतीबाई या दादासाहेब फाळके यांच्या पत्नी. दादासाहेबांचा पहिला

Marathi

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, BLACK, 10/14 PT

धुंडिराज गोविंद फाळके ऊर्फ दादासाहेब फाळके (जन्म : त्र्यंबकेश्वर, महाराष्ट्र, - नाशिक, १६ फेब्रुवारी १९४४) हे चित्रपटनिर्मिती करणारे महाराष्ट्रातील व भारतातील पहिली व्यक्ती होते आणि यासाठीच त्यांना भारतीय चित्रपटांचा जनक मानले जाते . १९१३ साली त्यांनी निर्माण केलेला राजा हरिश्चंद्र हा मूक चित्रपट मराठी व भारतीय चित्रपटसृष्टीच्या इतिहासातील आद्य चित्रपट होय. १९३७ पर्यंतच्या आपल्या १९ वर्षाच्या कारकिर्दीत त्यांनी ९५ चित्रपटांची व २६ लघुपटांची निर्मिती केली. भारतीय अभिनेत्यांना त्यांच्या जन्मभरच्या चित्रपटविषयक योगदानाबद्दल भारतीय चित्रसृष्टीतील दादासाहेब फाळके पुरस्कार हा सर्वांत मोठा पुरस्कार दिला जातो.

जीवनचरित्र

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व १९१२ साली त्यांनी राजा हरिश्चंद्र हा पहिला मूकपट काढला. तो ३ मे १९१३ या दिवशी मुंबईच्या कॉरोनेशन चित्रपटगृहात प्रेक्षकांना पहिल्यांदा दाखवण्यात आला. सरस्वतीबाई या दादासा-

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 10/14 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे

GRAPHIK DEVANAGARI BLACK, 10/14 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे

Marathi

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 7/9 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व १९१२ साली त्यांनी राजा हरिश्चंद्र हा पहिला मूकपट काढला. तो ३ मे १९१३ या दिवशी मुंबईच्या कॉरोनेशन चित्रपटगृहात

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 7/9 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व १९१२ साली त्यांनी राजा हरिश्चंद्र हा पहिला मूकपट काढला. तो ३ मे १९१३ या दिवशी मुंबईच्या कॉरोनेशन

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 7/9 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 7/10 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 7/10 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 7/10 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of

Marathi

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 9/12 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे लाईफ ऑफ ख्रिस्त (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व १९१२ साली त्यांनी राजा

GRAPHIK REGULAR, 9/12 PT

Dhundiraj Phalke was born on 30 April 1870 at Trimbak, Bombay Presidency into a Marathi-speaking family. His father, Govind Sadashiv Phalke alias Dajishastri, was a Sanskrit scholar and worked as a Hindu priest conducting religious ceremonies and his mother, Dwarkabai, was a housewife. The couple had seven children, three sons and four daughters. Shivrampant, the eldest, was twelve years elder than Phalke and worked in Baroda. He briefly worked as the Dewan (Chief Administrator) of the princely state of Jawhar and died in 1921, at the age of 63. Phalke's second brother, Raghunathrao, also worked as a priest and died at a young age of 21. Dajishastri taught Phalke to conduct religious rituals like yajna and dispensing of medicines. When he was appointed as a professor of Sanskrit in the Wilson College, Bombay, the family shifted its base to Bombay. Phalke completed his primary education in Trimbakeshwar and matriculation was done in Bombay. Phalke joined the Sir J. J. School of Art, Bombay in 1885 and completed a one-year course

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 9/12 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मांसोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे "लाईफ ऑफ ख्रिस्त" (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व १९१२

GRAPHIK MEDIUM, 9/12 PT

Dhundiraj Phalke was born on 30 April 1870 at Trimbak, Bombay Presidency into a Marathi-speaking family. His father, Govind Sadashiv Phalke alias Dajishastri, was a Sanskrit scholar and worked as a Hindu priest conducting religious ceremonies and his mother, Dwarkabai, was a housewife. The couple had seven children, three sons and four daughters. Shivrampant, the eldest, was twelve years elder than Phalke and worked in Baroda. He briefly worked as the Dewan (Chief Administrator) of the princely state of Jawhar and died in 1921, at the age of 63. Phalke's second brother, Raghunathrao, also worked as a priest and died at a young age of 21. Dajishastri taught Phalke to conduct religious rituals like yajna and dispensing of medicines. When he was appointed as a professor of Sanskrit in the Wilson College, Bombay, the family shifted its base to Bombay. Phalke completed his primary education in Trimbakeshwar and matriculation was done in Bombay. Phalke joined the Sir J. J. School of Art, Bombay in 1885 and completed a

Marathi

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 9/12 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मासोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे "लाईफ ऑफ ख्रिस्त" (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या व्यवसायाकडे वळवले व

GRAPHIK SEMIBOLD, 9/12 PT

Dhundiraj Phalke was born on 30 April 1870 at Trimbak, Bombay Presidency into a Marathi-speaking family. His father, Govind Sadashiv Phalke alias Dajishastri, was a Sanskrit scholar and worked as a Hindu priest conducting religious ceremonies and his mother, Dwarkabai, was a housewife. The couple had seven children, three sons and four daughters. Shivrampant, the eldest, was twelve years elder than Phalke and worked in Baroda. He briefly worked as the Dewan (Chief Administrator) of the princely state of Jawhar and died in 1921, at the age of 63. Phalke's second brother, Raghunathrao, also worked as a priest and died at a young age of 21. Dajishastri taught Phalke to conduct religious rituals like yajna and dispensing of medicines. When he was appointed as a professor of Sanskrit in the Wilson College, Bombay, the family shifted its base to Bombay. Phalke completed his primary education in Trimbakeshwar and matriculation was done in Bombay. Phalke joined the Sir J. J. School of Art, Bombay in 1885 and

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 9/12 PT

दादासाहेब फाळके यांचा जन्म नाशकाहून तीस किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या त्र्यंबकेश्वर येथे झाला. त्यांचे वडील प्रसिद्ध संस्कृत तज्ञ होते. इ.स. १८८५ साली त्यांनी सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुंबई येथे प्रवेश घेतला. इ.स. १८९० साली जे. जे. तून उत्तीर्ण झाल्यावर ते कला भवन, बडोदा येथे शिल्पकला, तंत्रज्ञान, रेखाटन, चित्रकला, छायाचित्रणकला इत्यादी गोष्टी शिकले. त्यांनी गोध्रा येथे छायाचित्रकार म्हणून व्यवसाय सुरू केला. परंतु, गोध्रा येथे झालेल्या ब्युबॉनिक प्लेगाच्या उद्रेकात त्यांची प्रथम पत्नी आणि मूल दगावल्यावर त्यांना ते गाव सोडावे लागले. लवकरच, त्यांची ल्युमिएर बंधूंनी नेमलेल्या ४० 'जादूगारां'पैकी एकाशी, जर्मन कार्ल हर्ट्झ याच्याशी ओळख झाली. त्यानंतर त्यांना 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संस्थे'साठी ड्राफ्ट्समन म्हणून काम करण्याची संधी मिळाली. त्यांच्या धडपड्या स्वभावामुळे लवकरच ते नोकरीच्या बंधनांना कंटाळले व त्यांनी छपाईचा व्यवसाय सुरू केला. शिळाप्रेस छपाईच्या तंत्रात ते वाकबगार होते. त्यांनी राजा रविवर्मासोबत काम केले. पुढे त्यांनी स्वतःचा छापखाना काढला, तसेच छपाईची नवी तंत्रे आणि यंत्रे अभ्यासायला जर्मनीची वारी केली. छपाई व्यवसायात त्यांच्या सहकाऱ्यांशी त्यांचे विवाद झाले आणि फाळकेंनी छपाईच्या व्यवसायास कायमचा रामराम ठोकला. पुढे "लाईफ ऑफ ख्रिस्त" (Life Of Christ) हा मूकपट पाहिल्यानंतर त्यांनी आपले लक्ष हलत्या चित्रांच्या

GRAPHIK BOLD, 9/12 PT

Dhundiraj Phalke was born on 30 April 1870 at Trimbak, Bombay Presidency into a Marathi-speaking family. His father, Govind Sadashiv Phalke alias Dajishastri, was a Sanskrit scholar and worked as a Hindu priest conducting religious ceremonies and his mother, Dwarkabai, was a housewife. The couple had seven children, three sons and four daughters. Shivrampant, the eldest, was twelve years elder than Phalke and worked in Baroda. He briefly worked as the Dewan (Chief Administrator) of the princely state of Jawhar and died in 1921, at the age of 63. Phalke's second brother, Raghunathrao, also worked as a priest and died at a young age of 21. Dajishastri taught Phalke to conduct religious rituals like yajna and dispensing of medicines. When he was appointed as a professor of Sanskrit in the Wilson College, Bombay, the family shifted its base to Bombay. Phalke completed his primary education in Trimbakeshwar and matriculation was done in Bombay. Phalke joined the Sir J. J.

Nepali

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, SEMIBOLD, 10/14 PT

सन् १८०९ मा माथिल्लो गंगा अर्थात कुमाउक्षेत्रको खोजीमा निस्केका डब्लूएस वेबले नेपालमा धौलागिरी हिमाल ८ हजार मिटरभन्दा माथिको उचाइमा रहेको रहस्योद्घाटन गरेका थिए अर्थात हिमालयका अग्ला पर्वतहरूमध्ये सबैभन्दा पहिले उचाई नापिएको हिमाल धौलागिरी हिमाल (८,१७२ मिटर) हो । यस हिमालको उचाई नापेपछि यसैलाई संसारको अग्लो हिमाल भनिएको थियो । पछि सन् १८४८ मा कञ्चनजङ्घाको उचाई नापियो र यसको उचाई ८ हजार ५ सय ८६ मिटर हो भन्ने निक्र्योल भएपछि कञ्चनजङ्घालाई संसारको अग्लो चुचुरो भनियो । त्यही वर्ष अन्य हिमालहरूको उचाई नापियो र रेकर्ड सङ्कलन गरेर सर्वे अफ इन्डियाको कार्यालयमा पठाइयो । त्यसको करिब तीन वर्षपछि सन् १८५२ मा जब सगरमाथा विश्वकै सबभन्दा अग्लो शिखर भन्ने ठहर भयो, त्यतिखेर त्यसको उचाइ २९ हजार २ फिट भनी मानियो ।

प्रथम आरोहण

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्मा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू प्रयोगमा ल्याइएका थिए । मे २६ मा विहान ७ बजे वोर्डेलो र इभान्स दुवैजना हन्ट एवम् नामग्याल शेर्पाको साथमा खोंचबाट शिविरतर्फ प्रस्थान गरे । वोर्डेलो र इभान्सले सुरूमा राम्रो

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, BOLD, 10/14 PT

सन् १८०९ मा माथिल्लो गंगा अर्थात कुमाउक्षेत्रको खोजीमा निस्केका डब्लूएस वेबले नेपालमा धौलागिरी हिमाल ८ हजार मिटरभन्दा माथिको उचाइमा रहेको रहस्योद्घाटन गरेका थिए अर्थात हिमालयका अग्ला पर्वतहरूमध्ये सबैभन्दा पहिले उचाई नापिएको हिमाल धौलागिरी हिमाल (८,१७२ मिटर) हो । यस हिमालको उचाई नापेपछि यसैलाई संसारको अग्लो हिमाल भनिएको थियो । पछि सन् १८४८ मा कञ्चनजङ्घाको उचाई नापियो र यसको उचाई ८ हजार ५ सय ८६ मिटर हो भन्ने निक्र्योल भएपछि कञ्चनजङ्घालाई संसारको अग्लो चुचुरो भनियो । त्यही वर्ष अन्य हिमालहरूको उचाई नापियो र रेकर्ड सङ्कलन गरेर सर्वे अफ इन्डियाको कार्यालयमा पठाइयो । त्यसको करिब तीन वर्षपछि सन् १८५२ मा जब सगरमाथा विश्वकै सबभन्दा अग्लो शिखर भन्ने ठहर भयो, त्यतिखेर त्यसको उचाइ २९ हजार २ फिट भनी मानियो ।

प्रथम आरोहण

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्मा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू प्रयोगमा ल्याइएका थिए । मे २६ मा विहान ७ बजे वोर्डेलो र इभान्स दुवैजना हन्ट एवम् नामग्याल शेर्पाको

Nepali

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, BLACK, 10/14 PT

सन् १८०९ मा माथिल्लो गंगा अर्थात कुमाउक्षेत्रको खोजीमा निस्केका डब्लूएस वेबले नेपालमा धौलागिरी हिमाल ८ हजार मिटरभन्दा माथिको उचाइमा रहेको रहस्योद्घाटन गरेका थिए अर्थात हिमालयका अग्ला पर्वतहरूमध्ये सबैभन्दा पहिले उचाई नापिएको हिमाल धौलागिरी हिमाल (८,१७२ मिटर) हो । यस हिमालको उचाई नापेपछि यसैलाई संसारको अग्लो हिमाल भनिएको थियो । पछि सन् १८४८ मा कञ्चनजङ्घाको उचाई नापियो र यसको उचाई ८ हजार ५ सय ८६ मिटर हो भन्ने निक्र्योल भएपछि कञ्चनजङ्घालाई संसारको अग्लो चुचुरो भनियो । त्यही वर्ष अन्य हिमालहरूको उचाई नापियो र रेकर्ड सङ्कलन गरेर सर्वे अफ इन्डियाको कार्यालयमा पठाइयो । त्यसको करिब तीन वर्षपछि सन् १८५२ मा जब सगरमाथा विश्वकै सबभन्दा अग्लो शिखर भन्ने ठहर भयो, त्यतिखेर त्यसको उचाइ २९ हजार २ फिट भनी मानियो ।

प्रथम आरोहण

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्मा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू प्रयोगमा ल्याइएका थिए । मे २६ मा विहान ७ बजे

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 10/14 PT

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्मा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण

GRAPHIK DEVANAGARI BLACK, 10/14 PT

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्मा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण

Nepali

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 7/9 PT

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्ममा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू प्रयोगमा ल्याइएका थिए । मे २६ मा विहान ७ बजे वोर्डेलो र इभान्स दुवैजना हन्ट एवम् नामग्याल शेर्पाको साथमा खोंचबाट शिविरतर्फ प्रस्थान गरे । वोर्डेलो र इभान्सले सुरूमा राम्रो प्रगति गरे पनि

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 7/9 PT

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्ममा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू प्रयोगमा ल्याइएका थिए । मे २६ मा विहान ७ बजे वोर्डेलो र इभान्स दुवैजना हन्ट एवम् नामग्याल शेर्पाको साथमा खोंचबाट शिविरतर्फ प्रस्थान गरे । वोर्डेलो र इभान्सले

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 7/9 PT

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्ममा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू प्रयोगमा ल्याइएका थिए । मे २६ मा विहान ७ बजे वोर्डेलो र इभान्स दुवैजना हन्ट एवम् नामग्याल शेर्पाको

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 7/10 PT

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्ममा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू प्रयोगमा ल्याइएका थिए । मे २६ मा विहान ७ बजे वोर्डेलो र

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 7/10 PT

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्ममा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 7/10 PT

सन् १९५२ को ग्रीष्म ऋतुमा स्वीस नागरिकहरूलाई सगरमाथा आरोहण गर्ने स्वीकृति दिएपछि सन् १९५३ सम्ममा बेलायती नागरिकहरूलाई सफल आरोहणको लागि अन्तिम मौका दिइएको थियो । सन् १९५४ मा फ्रेन्च नागरिकहरूलाई र सन् १९५५ मा स्वीस नागरिकहरूलाई आरोहण अनुमति दिइएको थियो । बेलायती हिमालयन समितिले उच्च पहाड एवम् हिमाल चढाइमा कीर्तिमान प्राप्त गरेका एक सेना अधिकृत जोहन हन्टलाई समूह नेताको (टिम लिडर) रूपमा नियुक्त गरेको थियो । उनले नेतृत्व गरेको समूहले सन् १९३६ मा सगरमाथाको साहसिक यात्रामा सफलता हासिल गर्न सकेन । हन्टको समूह ठूलो थियो । सिपटनका साथमा सन् १९५२ मा चढेका मानिसहरू पनि त्यहा समावेश भएका थिए । उक्त समूहमा जर्ज व्याण्ड, टम वोर्ड्रिन, चार्लस्, अल्फ ग्रेगरी, एडमण्ड हिलारी, जर्ज लोवे, माइकल वार्ड, टिम डाक्टर, मिखाइल वेष्टमाकोट र चार्लस वाइली समावेश भएका थिए । त्यसैबेला जेम्स मोरिसले पत्रिकाको लागि समाचार लेख्ने र टम स्टोवर्टले त्यस कार्यको फोटो खिच्ने कार्य गरेका थिए । तेन्जिङ्लाई शेर्पाहरूको सरदार भै आरोहण समूहमा समावेश हुन निमन्त्रणा गरिएको थियो । त्यस साहसिक यात्राका क्रममा आधार शिविरदेखि ल्होत्सेको मोहडासम्म पंक्तिबद्ध रूपमा शिविर स्थापना गरिएका थिए । उक्त यात्रामा दुई प्रकारका अक्सिजन उपकरणहरू प्रयोगमा

Nepali

GRAPHIK DEVANAGARI REGULAR, 9/12 PT

सन् १८०९ मा माथिल्लो गंगा अर्थात कुमाउक्षेत्रको खोजीमा निस्केका डब्लूएस वेबले नेपालमा धौलागिरी हिमाल ८ हजार मिटरभन्दा माथिको उचाइमा रहेको रहस्योद्घाटन गरेका थिए अर्थात हिमालयका अग्ला पर्वतहरूमध्ये सबैभन्दा पहिले उचाई नापिएको हिमाल धौलागिरी हिमाल (८,१७२ मिटर) हो । यस हिमालको उचाई नापेपछि यसैलाई संसारको अग्लो हिमाल भनिएको थियो । पछि सन् १८४८ मा कञ्चनजङ्घाको उचाई नापियो र यसको उचाई ८ हजार ५ सय ८६ मिटर हो भन्ने निक्र्योल भएपछि कञ्चनजङ्घालाई संसारको अग्लो चुचुरो भनियो । त्यही वर्ष अन्य हिमालहरूको उचाई नापियो र रेकर्ड सङ्कलन गरेर सर्वे अफ इन्डियाको कार्यालयमा पठाइयो । त्यसको करिब तीन वर्षपछि सन् १८५२ मा जब सगरमाथा विश्वकै सबभन्दा अग्लो शिखर भन्ने ठहर भयो, त्यतिखेर त्यसको उचाइ २९ हजार २ फिट भनी मानियो । सगरमाथालाई रोमन संकेतचिह्न 'पिक १५' नाम प्रदान गरियो । सन् १८५२ तिर पहाडहरूको उचाइ 'कियोडा लाईट' यन्त्रको प्रयोगबाट मापन गरिरहेका भारतको सर्वे विभागको एउटा टोलीका सदस्यहरूमध्ये एक बङ्गाली नागरिक राधानाथ सिकन्दरले आफूले सर्वोच्च शिखर पत्ता लगाएको दाबी गरे । राधानाथका सहयोगिका रूपमा हेनेसी नामका उनका चेला थिए । उक्त विभागका सर्वे कर्मचारीहरू तेजवीर बुढाथोकी र राधानाथ सिक्दरले पत्ता लगाएको उक्त शिखरको उचाइ ८ हजार ८ सय ४० मिटर थियो । राधानाथ प्रतिभाशाली गणितज्ञ थिए । सर्वे अफ

GRAPHIK REGULAR, 9/12 PT

In 1849, the British survey wanted to preserve local names if possible (e.g., Kangchenjunga and Dhaulagiri), and Andrew Waugh, the British Surveyor General of India, argued that he could not find any commonly used local name, as his search for a local name was hampered by Nepal's and Tibet's exclusion of foreigners. Waugh argued that because there were many local names, it would be difficult to favour one name over all others; he decided that Peak XV should be named after British surveyor Sir George Everest, his predecessor as Surveyor General of India. Everest himself opposed the name suggested by Waugh and told the Royal Geographical Society in 1857 that "Everest" could not be written in Hindi nor pronounced by "the native of India". Waugh's proposed name prevailed despite the objections, and in 1865, the Royal Geographical Society officially adopted Mount Everest as the name for the highest mountain in the world. The modern pronunciation of Everest is different from Sir George's pronunciation of his surname. In the late

GRAPHIK DEVANAGARI MEDIUM, 9/12 PT

सन् १८०९ मा माथिल्लो गंगा अर्थात कुमाउक्षेत्रको खोजीमा निस्केका डब्लूएस वेबले नेपालमा धौलागिरी हिमाल ८ हजार मिटरभन्दा माथिको उचाइमा रहेको रहस्योद्घाटन गरेका थिए अर्थात हिमालयका अग्ला पर्वतहरूमध्ये सबैभन्दा पहिले उचाई नापिएको हिमाल धौलागिरी हिमाल (८,१७२ मिटर) हो । यस हिमालको उचाई नापेपछि यसैलाई संसारको अग्लो हिमाल भनिएको थियो । पछि सन् १८४८ मा कञ्चनजङ्घाको उचाई नापियो र यसको उचाई ८ हजार ५ सय ८६ मिटर हो भन्ने निक्र्योल भएपछि कञ्चनजङ्घालाई संसारको अग्लो चुचुरो भनियो । त्यही वर्ष अन्य हिमालहरूको उचाई नापियो र रेकर्ड सङ्कलन गरेर सर्वे अफ इन्डियाको कार्यालयमा पठाइयो । त्यसको करिब तीन वर्षपछि सन् १८५२ मा जब सगरमाथा विश्वकै सबभन्दा अग्लो शिखर भन्ने ठहर भयो, त्यतिखेर त्यसको उचाइ २९ हजार २ फिट भनी मानियो । सगरमाथालाई रोमन संकेतचिह्न 'पिक १५' नाम प्रदान गरियो । सन् १८५२ तिर पहाडहरूको उचाइ 'कियोडा लाईट' यन्त्रको प्रयोगबाट मापन गरिरहेका भारतको सर्वे विभागको एउटा टोलीका सदस्यहरूमध्ये एक बङ्गाली नागरिक राधानाथ सिकन्दरले आफूले सर्वोच्च शिखर पत्ता लगाएको दाबी गरे । राधानाथका सहयोगिका रूपमा हेनेसी नामका उनका चेला थिए । उक्त विभागका सर्वे कर्मचारीहरू तेजवीर बुढाथोकी र राधानाथ सिक्दरले पत्ता लगाएको उक्त शिखरको उचाइ ८ हजार ८ सय ४० मिटर थियो ।

GRAPHIK MEDIUM, 9/12 PT

In 1849, the British survey wanted to preserve local names if possible (e.g., Kangchenjunga and Dhaulagiri), and Andrew Waugh, the British Surveyor General of India, argued that he could not find any commonly used local name, as his search for a local name was hampered by Nepal's and Tibet's exclusion of foreigners. Waugh argued that because there were many local names, it would be difficult to favour one name over all others; he decided that Peak XV should be named after British surveyor Sir George Everest, his predecessor as Surveyor General of India. Everest himself opposed the name suggested by Waugh and told the Royal Geographical Society in 1857 that "Everest" could not be written in Hindi nor pronounced by "the native of India". Waugh's proposed name prevailed despite the objections, and in 1865, the Royal Geographical Society officially adopted Mount Everest as the name for the highest mountain in the world. The modern pronunciation of Everest is different from Sir George's pronunciation of his surname.

Nepali

GRAPHIK DEVANAGARI SEMIBOLD, 9/12 PT

सन् १८०९ मा माथिल्लो गंगा अर्थात कुमाउक्षेत्रको खोजीमा निस्केका डब्लूएस वेबले नेपालमा धौलागिरी हिमाल ८ हजार मिटरभन्दा माथिको उचाइमा रहेको रहस्योद्घाटन गरेका थिए अर्थात हिमालयका अग्ला पर्वतहरूमध्ये सबैभन्दा पहिले उचाई नापिएको हिमाल धौलागिरी हिमाल (८,१७२ मिटर) हो । यस हिमालको उचाई नापेपछि यसैलाई संसारको अग्लो हिमाल भनिएको थियो । पछि सन् १८४८ मा कञ्चनजङ्घाको उचाई नापियो र यसको उचाई ८ हजार ५ सय ८६ मिटर हो भन्ने निक्र्योल भएपछि कञ्चनजङ्घालाई संसारको अग्लो चुचुरो भनियो । त्यही वर्ष अन्य हिमालहरूको उचाई नापियो र रेकर्ड सङ्कलन गरेर सर्वे अफ इन्डियाको कार्यालयमा पठाइयो । त्यसको करिब तीन वर्षपछि सन् १८५२ मा जब सगरमाथा विश्वकै सबभन्दा अग्लो शिखर भन्ने ठहर भयो, त्यतिखेर त्यसको उचाइ २९ हजार २ फिट भनी मानियो । सगरमाथालाई रोमन संकेतचिह्न 'पिक १५' नाम प्रदान गरियो । सन् १८५२ तिर पहाडहरूको उचाइ 'कियोडा लाईट' यन्त्रको प्रयोगबाट मापन गरिरहेका भारतको सर्वे विभागको एउटा टोलीका सदस्यहरूमध्ये एक बङ्गाली नागरिक राधानाथ सिकन्दरले आफूले सर्वोच्च शिखर पत्ता लगाएको दाबी गरे । राधानाथका सहयोगिका रूपमा हेनेसी नामका उनका चेला थिए । उक्त विभागका सर्वे कर्मचारीहरू तेजवीर बुढाथोकी र राधानाथ सिक्दरले पत्ता लगाएको उक्त शिखरको उचाइ ८ हजार ८ सय ४० मिटर थियो ।

GRAPHIK SEMIBOLD, 9/12 PT

In 1849, the British survey wanted to preserve local names if possible (e.g., Kangchenjunga and Dhaulagiri), and Andrew Waugh, the British Surveyor General of India, argued that he could not find any commonly used local name, as his search for a local name was hampered by Nepal's and Tibet's exclusion of foreigners. Waugh argued that because there were many local names, it would be difficult to favour one name over all others; he decided that Peak XV should be named after British surveyor Sir George Everest, his predecessor as Surveyor General of India. Everest himself opposed the name suggested by Waugh and told the Royal Geographical Society in 1857 that "Everest" could not be written in Hindi nor pronounced by "the native of India". Waugh's proposed name prevailed despite the objections, and in 1865, the Royal Geographical Society officially adopted Mount Everest as the name for the highest mountain in the world. The modern pronunciation of Everest is different from Sir George's pronunciation of his

GRAPHIK DEVANAGARI BOLD, 9/12 PT

सन् १८०९ मा माथिल्लो गंगा अर्थात कुमाउक्षेत्रको खोजीमा निस्केका डब्लूएस वेबले नेपालमा धौलागिरी हिमाल ८ हजार मिटरभन्दा माथिको उचाइमा रहेको रहस्योद्घाटन गरेका थिए अर्थात हिमालयका अग्ला पर्वतहरूमध्ये सबैभन्दा पहिले उचाई नापिएको हिमाल धौलागिरी हिमाल (८,१७२ मिटर) हो । यस हिमालको उचाई नापेपछि यसैलाई संसारको अग्लो हिमाल भनिएको थियो । पछि सन् १८४८ मा कञ्चनजङ्घाको उचाई नापियो र यसको उचाई ८ हजार ५ सय ८६ मिटर हो भन्ने निक्र्योल भएपछि कञ्चनजङ्घालाई संसारको अग्लो चुचुरो भनियो । त्यही वर्ष अन्य हिमालहरूको उचाई नापियो र रेकर्ड सङ्कलन गरेर सर्वे अफ इन्डियाको कार्यालयमा पठाइयो । त्यसको करिब तीन वर्षपछि सन् १८५२ मा जब सगरमाथा विश्वकै सबभन्दा अग्लो शिखर भन्ने ठहर भयो, त्यतिखेर त्यसको उचाइ २९ हजार २ फिट भनी मानियो । सगरमाथालाई रोमन संकेतचिह्न 'पिक १५' नाम प्रदान गरियो । सन् १८५२ तिर पहाडहरूको उचाइ 'कियोडा लाईट' यन्त्रको प्रयोगबाट मापन गरिरहेका भारतको सर्वे विभागको एउटा टोलीका सदस्यहरूमध्ये एक बङ्गाली नागरिक राधानाथ सिकन्दरले आफूले सर्वोच्च शिखर पत्ता लगाएको दाबी गरे । राधानाथका सहयोगिका रूपमा हेनेसी नामका उनका चेला थिए । उक्त विभागका सर्वे कर्मचारीहरू तेजवीर बुढाथोकी र राधानाथ सिक्दरले पत्ता लगाएको उक्त शिखरको उचाइ ८ हजार ८ सय

GRAPHIK BOLD, 9/12 PT

In 1849, the British survey wanted to preserve local names if possible (e.g., Kangchenjunga and Dhaulagiri), and Andrew Waugh, the British Surveyor General of India, argued that he could not find any commonly used local name, as his search for a local name was hampered by Nepal's and Tibet's exclusion of foreigners. Waugh argued that because there were many local names, it would be difficult to favour one name over all others; he decided that Peak XV should be named after British surveyor Sir George Everest, his predecessor as Surveyor General of India. Everest himself opposed the name suggested by Waugh and told the Royal Geographical Society in 1857 that "Everest" could not be written in Hindi nor pronounced by "the native of India". Waugh's proposed name prevailed despite the objections, and in 1865, the Royal Geographical Society officially adopted Mount Everest as the name for the highest mountain in the world. The modern pronunciation of Everest is different from Sir

INDEPENDENT VOWELS	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ ॲ ऍ ऑ
INDEPENDENT VOWELS (LANGUAGE SUPPORT)	ऄ ऎ ऒ ॶ ॷ ॳ ॴ ॵ ॠ ॡ
CONSONANTS	क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ
CONSONANTS (LANGUAGE SUPPORT)	ॻ ॼ ॾ ॿ ॹ ॺ ॸ
ADDITIONAL CONSONANTS (NUKTA FORMS)	क़ ख़ ग़ ज़ ड़ ढ़ ऩ फ़ य़ ऱ ऴ
NUMERALS	० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
DEPENDENT VOWEL SIGNS	◌ा ◌ि ◌ी ◌ु ◌ू ◌ृ ◌ॢ ◌े ◌ै ◌ो ◌ौ ◌ॅ ◌ॉ
DEPENDENT VOWEL SIGNS (LANGUAGE SUPPORT)	◌ॄ ◌ॣ ◌ॆ ◌ॊ ◌ॖ ◌ॗ ◌ऺ ◌ऻ ◌ॏ ◌ॎ ◌ॕ
MODIFIERS	◌ं ◌ः ◌ऀ ◌ँ ◌् ◌़ ◌॑ ◌॒ ◌॓ ◌॔ ◌ꣿ ◌्र र्‍◌
SYMBOLS AND PUNCTUATION	ॐ ऽ । ॥
HALF FORMS	क्◌ ख्◌ ग्◌ घ्◌ च्◌ ज्◌ झ्◌ ञ्◌ ण्◌ त्◌ थ्◌ ध्◌ न्◌ प्◌ फ्◌ ब्◌ भ्◌ म्◌ य्◌ ल्◌ व्◌ श्◌ ष्◌ स्◌ ळ्◌ क्ष्◌ ज्ञ्◌
HALF NUKTA FORMS	क़्◌ ख़्◌ ग़्◌ ज़्◌ फ़्◌ य़्◌
RAKAR FORMS	क्र ख्र ग्र घ्र ङ्र च्र छ्र ज्र झ्र ञ्र ट्र ठ्र ड्र ढ्र ण्र त्र थ्र द्र ध्र न्र प्र फ्र ब्र भ्र म्र य्र ल्र व्र श्र ष्र स्र ह्र ळ्र क्ष्र ज्ञ्र
RAKAR NUKTA FORMS	क़्र ख़्र ग़्र ज़्र फ़्र य़्र
HALF RAKAR FORMS	क्र्◌ ख्र्◌ ग्र्◌ घ्र्◌ च्र्◌ ज्र्◌ झ्र्◌ ञ्र्◌ ण्र्◌ त्र्◌ थ्र्◌ ध्र्◌ न्र्◌ प्र्◌ फ्र्◌ ब्र्◌ भ्र्◌ म्र्◌ य्र्◌ ल्र्◌ व्र्◌ श्र्◌ ष्र्◌ स्र्◌ क्ष्र्◌ ज्ञ्र्◌
HALF RAKAR NUKTA FORMS	क़्र्◌ ख़्र्◌ ग़्र्◌ ज़्र्◌ फ़्र्◌ य़्र्◌

CONJUNCTS

क्क क्ख क्च क्ज क्ट क्ण क्त क्थ क्द क्न क्प क्फ क्म क्य क्ल
क्व क्श क्ष क्स ख्ख ख्त ख्न ख्म ख्य ख्व ख्श ग्ग ग्घ ग्ज ग्ण ग्द
ग्ध ग्न ग्ब ग्भ ग्म ग्य ग्ल ग्व ग्स घ्न घ्म घ्य च्च च्छ च्न च्म च्य छ्य
छ्व ज्क ज्ज ज्झ ज्ञ ज्ट ज्ड ज्त ज्द ज्न ज्ब ज्म ज्य ज्व झ्न झ्म झ्य
ञ्च ञ्छ ञ्ज ञ्श ट्ट ट्ठ ट्य ट्व ठ्ठ ठ्य ठ्व ड्ड ड्ढ ड्य ड्व ढ्ढ ढ्य ढ्व ण्ट ण्ठ
ण्ड ण्ढ ण्ण ण्म ण्य ण्व त्क त्ख त्त त्थ त्न त्प त्फ त्म त्य त्ल त्व
त्स थ्न थ्य थ्व दृ द्घ द्द द्ध द्न द्ब द्ग द्म द्य द्व ध्न ध्म ध्य ध्व न्क न्च न्छ
न्ट न्ड न्त न्थ न्द न्ध न्न न्प न्फ न्भ न्म न्य न्व न्स न्ह प्ट प्ठ प्त प्न
प्प प्फ प्म प्य प्ल प्व प्स फ्ज फ्ट फ्त फ्न फ्प फ्फ फ्य फ्ल फ्श
ब्ज ब्ज़ ब्झ ब्त ब्द ब्ध ब्न ब्ब ब्भ ब्य ब्ल ब्व ब्श ब्स भ्न भ्य भ्ल भ्व
म्त म्द म्न म्प म्ब म्भ म्म म्य म्ल म्व म्श म्स म्ह य्न य्य ऱ्य ऱ्ह ल्क
ल्ख ल्ग ल्ज ल्ट ल्ठ ल्ड ल्ढ ल्त ल्थ ल्द ल्प ल्फ ल्ब ल्भ ल्म ल्य
ल्ल ल्व ल्स ल्ह व्न व्य व्ल व्व व्ह श्क श्च श्छ श्ट श्त श्न श्म श्य
श्ल श्व श्श ष्क ष्ट ष्ठ ष्ण ष्प ष्फ ष्म ष्य ष्व ष्ष स्क स्ख स्ज स्ट
स्त स्थ स्द स्न स्प स्फ स्ब स्म स्य स्ल स्व स्स ह्ण ह्न ह्म ह्य ह्ल ह्व ळ्य
क्त्य क्त्र क्त्व क्प्र क्व्य क्ष्म क्ष्य क्ष्व क्स्ट क्स्ड क्स्त ग्ध्य ग्ध्व ग्न्य
ग्भ्य ग्र्य च्छ्व छ्र्य ज्ज्ञ ज्ज्य ज्ज्व ज्ञ्य त्क्य त्क्र त्क्व त्क्ष त्व्र त्त्य त्त्व
त्न्य त्प्र त्प्ल त्म्य त्र्य त्स्न त्स्य त्स्व द्ग्र द्द्य द्ध्य द्ब्र ध्न्य न्क्स न्त्य न्त्र
न्त्स न्थ्य न्थ्व न्द्र न्द्व न्ध्य न्ध्र न्ध्व न्न्य न्प्र न्फ्र न्भ्य न्भ्व न्म्य न्स्ट
न्स्य प्त्य ब्ज्य ब्ध्व ब्भ्र ब्ल्य भ्र्य म्प्ल म्प्र म्ब्य म्ब्र म्भ्य म्भ्र म्भ्व ल्क्य
ल्थ्य ल्द्र ल्ल्य ल्ड्ड ष्क्र ष्ट्य ष्ट्र ष्ट्व ष्ठ्य ष्ठ्र ष्ण्य ष्प्र ष्म्य स्क्र
स्क्व स्त्य स्त्र स्त्व स्थ्य स्प्र स्म्य स्प क्ष्म्य क्स्प्र क्स्प्ल न्स्म्य

CONJUNCTS (NUKTA FORMS)

क़्क़ ल्ज़ श्क़ क़्त क़्फ क़्फ़ क़्ब क़्म ख़्त ख़्म ख़्व ख़्य ख़्श ख़्स ज़्ज़
ज़्य फ़्ज़ फ़्त फ़्फ़ फ़्स

LOCALISED CONSONANTS (MARATHI)

ल श

LOCALISED CONJUNCTS (MARATHI)

क्ल क्श क्स्प्ल ख्श ग्ल ञ्श त्प्ल त्ल प्ल फ्ल फ्श ब्ल ब्श भ्ल
म्प्ल म्ल म्श ल्ल व्ल श्क श्च श्छ श्ट श्त श्न श्म श्य श्ल श्व श्श
स्ल स्प ह्ल

LOCALISED HALF FORMS (MARATHI)

ल्◌ श्◌

LOCALISED RAKAR FORMS (MARATHI)

ल्र

LOCALISED NUKTA FORMS (MARATHI)

श्क़ ख़्श

LOCALISED CONSONANTS (NEPALI)	झ
LOCALISED CONJUNCTS (NEPALI)	झ्न झ्म झ्य
LOCALISED HALF FORMS (NEPALI)	झ्◌
LOCALISED RAKAR FORMS (NEPALI)	झ्र
LOCALISED HALF RAKAR FORMS (NEPALI)	झ्र्◌
LOCALISED NUKTA FORMS (NEPALI)	झ़ झ़्र
LOCALISED HALF NUKTA FORMS (NEPALI)	झ़्◌ झ़्र्◌
LOCALISED NUMERALS (NEPALI)	१ ५ ८ ९
INCLUDED LIGATURES	ईं ईँ दृ रु रू शृ हृ ऱु ऱू
INCLUDED VOWEL SIGN LIGATURES	◌िं ◌िर् ◌िर्ं ◌िर्ँ ◌िँ ◌ीं ◌ीर् ◌ीर्ं ◌ीँ ◌ीर्ँ ◌ों ◌ोर् ◌ोर्ं ◌ोँ ◌ौं ◌ौर् ◌ौर्ं ◌ौँ ◌ें ◌ेर् ◌ेर्ं ◌ेर्ँ ◌ैँ ◌ैं ◌ैर् ◌ैर्ं ◌ैर्ँ ◌ैँ ◌ॅं ◌ॅँ ◌ु ◌ू

UPPERCASE

ABCDEFGHIJKLMNOPQRSTUVWXYZ

LOWERCASE

abcdefghijklmnopqrstuvwxyz

STANDARD PUNCTUATION

¡!¿?.,:;…-–—()[]{}/|\&@*“”‘’·„,«»‹› §•¶†‡©℗®™

ALL CAP PUNCTUATION

¡¿-–—()[]{}/|\@«»‹›

LIGATURES

ff fi fl

PROPORTIONAL LINING
default figures

$£€¥1234567890¢ƒ%‰ª°#°<+=−×÷>≤≈≠±Δ≥′″

PROPORTIONAL OLDSTYLE

$£€¥1234567890

TABULAR LINING

$£€¥1234567890¢ƒ%‰<+=−×÷>≤≈≠≥

TABULAR OLDSTYLE

$£€¥1234567890

PREBUILT FRACTIONS

½ ⅓ ⅔ ¼ ¾ ⅛ ⅜ ⅝ ⅞

NUMERATORS &
DENOMINATORS

H1234567890⁄1234567890

SUPERSCRIPT &
SUBSCRIPT

H1234567890 H1234567890

STYLISTIC ALTERNATES

at ß áăâäàāąåãţťŧ

ACCENTED UPPERCASE

ÁÂÀÄÅÃĂĀĄÅÆǼÇĆČĈĊĎÐÉÊÈËĚĖĒĘĞĜ
ĢĠĦĤÍÎÌÏĪĮĨĬĴĶŁĹĽĻĿÑŃŇŅŊÓÔÒÖÕŐŌØ
ØŒŔŘŖŠŚŞŜŞÞŤŢŦÚWÛÙÜŬŰŪŲŮŨẂŴẀ
ẄÝŶỲŸIJŽŹŻ

ACCENTED LOWER CASE

áâàäåãăāąåæǽçćčĉċďđéêèëěėēęğĝģġħĥ
íîìïīįĩĭĵķłĺľļŀñńňņŋóôòöõőōøǿœŕřŗßšśşŝşþť
ţŧúûùüŭűūųůũẃŵẁẅýŷỳÿijžźż

OPENTYPE FEATURES FAMILY WIDE	**DEACTIVATED**	**ACTIVATED**
ALL CAPS opens up spacing, moves punctuation up	Fish & ‘Chips’ for £24.65?	FISH & ‘CHIPS’ FOR £24.65?
PROPORTIONAL LINING default figures	Sale Price: $3,460 €1,895 Originally: **$7,031 £9,215**	Sale Price: $3,460 €1,895 Originally: **$7,031 £9,215**
PROPORTIONAL OLDSTYLE	Sale Price: $3,460 €1,895 Originally: **$7,031 £9,215**	Sale Price: $3,460 €1,895 Originally: **$7,031 £9,215**
TABULAR LINING	Sale Price: $3,460 €1,895 Originally: **$7,031 £9,215**	Sale Price: $3,460 €1,895 Originally: **$7,031 £9,215**
TABULAR OLDSTYLE	Sale Price: $3,460 €1,895 Originally: **$7,031 £9,215**	Sale Price: $3,460 €1,895 Originally: **$7,031 £9,215**
FRACTIONS ignores numeric date format	21/03/10 and 2 1/18 460/920	21/03/10 and 2 1⁄18 460⁄920
SUPERSCRIPT/SUPERIOR	x158 + y23 × z18 − a4260	$x^{158} + y^{23} \times z^{18} - a^{4260}$
SUBSCRIPT/INFERIOR	x158 ÷ y23 × z18 − a4260	$x_{158} \div y_{23} \times z_{18} - a_{4260}$
DENOMINATOR for making arbitrary fractions	0123456789 0123456789	0123456789 $_{0123456789}$
NUMERATOR for making arbitrary fractions	0123456789 0123456789	0123456789 ^{0123456789}
LANGUAGE FEATURE Română (Romanian) s accent	ÎNSUŞI conştiinţa ştiinţifice	ÎNSUȘI conștiința științifice

OPENTYPE FEATURES ROMAN & ITALIC	**DEACTIVATED**	**ACTIVATED**
STYLISTIC SET 01 alternate a	Natural availability *gelatines*	Natural availability *gelatines*
STYLISTIC SET 02 alternate t	Natural availability *gelatines*	Natural availability *gelatines*
STYLISTIC SET 03 alternate ß	Schriftgießerei größter *außen*	Schriftgießerei größter *außen*
STYLISTIC ALTERNATES Illustrator/Photoshop	Natural *availability größerer*	Natural *availability größerer*

STYLES INCLUDED IN COMPLETE FAMILY

Graphik Devanagari Thin
Graphik Devanagari Extralight
Graphik Devanagari Light
Graphik Devanagari Regular
Graphik Devanagari Medium
Graphik Devanagari Semibold
Graphik Devanagari Bold
Graphik Devanagari Black
Graphik Devanagari Super

SUPPORTED LANGUAGES (DEVANAGARI)

Awadhi, Dotyali, Eastern Tamang Goan Konkani, Hindi, Maharashtrian Konkani, Marathi, Nepali (individual language), Basic Sanskrit, Sindhi

SUPPORTED LANGUAGES (LATIN)

Afrikaans, Albanian, Asturian, Basque, Bosnian, Breton, Catalan, Cornish, Croatian, Czech, Danish, Dutch, English, Esperanto, Estonian, Faroese, Finnish, French, Galician, German, Greenlandic, Guarani, Hawaiian, Hungarian, Ibo, Icelandic, Indonesian, Irish, Gaelic, Italian, Kurdish, Latin, Latvian, Lithuanian, Livonian, Malagasy, Maltese, Maori, Moldavian, Norwegian, Occitan, Polish, Portuguese, Romanian, Romansch, Saami, Samoan, Scots, Scottish Gaelic, Serbian (Latin), Slovak, Slovenian, Spanish (Castillian), Swahili, Swedish, Tagalog, Turkish, Walloon, Welsh, Wolof

CONTACT

Commercial Type
277 Grand Street, Fl 3
New York, New York 10002

office 212-604-0955
www.commercialtype.com

COPYRIGHT

© 2024 Commercial Type.
All rights reserved.
Commercial® and Graphik® are registered trademarks of Schwartzco Inc., dba Commercial Type.

This file may be used for evaluation purposes only.

ABOUT THE DESIGNERS

Hitesh "Rocky" Malaviya (born 1986) is a type and graphic designer from India. He was trained under a sign painter as a high-school student and later went to the Faculty of Fine Arts, MS University, Baroda, to study design. He started his career as an art director in an advertising agency. After working for five years at Wieden+Kennedy, he left advertising to pursue his love for letters. In 2014, he joined Indian Type Foundry as a type designer, where he worked on Latin and South Asian scripts, including Devanagari, Gujarati, Bengali, Kannada, Malayalam, Tamil and Thai. In 2019, he started working with Universal Thirst as a consultant, producing multiple typefaces for various Indic scripts. Since 2022, he has been working independently, collaborating with numerous type foundries across the globe. Two of his projects won the Certificate of Excellence from The New York Type Directors Club in 2023. Apart from his practice, he teaches type design at several design schools in India.

Christian Schwartz (born 1977) is a partner, with London-based designer Paul Barnes, in the type foundry Commercial Type, and heads up the company's New York office. Schwartz has published fonts with many respected independent foundries including House Industries, Emigre, and Font Bureau, and has designed proprietary typefaces for corporations and publications worldwide. Schwartz and Barnes began an ongoing collaboration in 2005 with their extensive typeface system for The Guardian, and together with their team have completed custom typefaces for clients including *Esquire*, the Museum of Modern Art (MoMA) in New York, Google, and *Vanity Fair*.